विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

यह ऐतिहासिक महत्त्व का काम हुआ है!

बावज़ूद इस संभावना के कि मेरी इस बात से बहुत सारे लोग असहमत हो सकते हैं, मेरा यह स्पष्ट मत है कि राजस्थान सरकार ने अपने उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत कार्यरत महाविद्यालय शिक्षकों में से 1309 वरिष्ठ शिक्षकों को प्रोफ़ेसर पद पर पदोन्नत कर बहुत बड़ा और ऐतिहासिक महत्त्व का काम किया है। सरकार के इस काम की मेरी सराहना को सही संदर्भों में समझने के लिए इस बात की पूरी पृष्ठभूमि को समझना होगा।

देश के अन्य प्रांतों की तरह हमारे प्रांत में भी उच्च शिक्षा की दो मुख्य धाराएं हैं:– एक धारा है विश्वविद्यालय और दूसरी है महाविद्यालय। इन दोनों की उप धाराएं भी हैं, लेकिन उनकी चर्चा फिलहाल उपयोगी नहीं होगी। बहुत पहले से यह सोच विद्यमान रहा है कि विश्वविद्यालय मुख्यत: स्नातकोत्तर अध्ययन और शोध के लिए होते हैं और महाविद्यालय स्नातक स्तरीय शिक्षण के लिए। अकादमिक दुनिया में विश्वविद्यालयों को ऊंचा माना जाता रहा है और विभिन्न शैक्षिक नीतियों और निर्णयों में उनकी ही भूमिका प्रमुख रहती है। मसलन, महाविद्यालयों में क्या पढ़ाया जाए, यह तै करने का काम विश्वविद्यालयों के पास रहता है। पाठ्यक्रम निर्माण से लगाकर परीक्षाओं के संचालन तक में उनकी मुख्य और महाविद्यालयों की गौण भूमिका रहती है। पदनाम के लिहाज़ से भी इन दोनों में अंतर रहा है। जहां विश्वविद्यालयों में लेक्चरर, रीडर और प्रोफ़ेसर की त्रिस्तरीय व्यवस्था विद्यमान रही वहां महाविद्यालयों में मोटे तौर पर लेक्चरर और प्रिंसिपल की दो स्तरीय व्यवस्था रही। विश्वविद्यालयों में बाद में पदनाम परिवर्तन हुआ तो लेक्चरर असिस्टेण्ट प्रॉफेसर हो गया, रीडर असोसिएट प्रोफ़ेसर हो गया। महाविद्यालयों में पदनाम परिवर्तन के लिए बहुत लम्बी लड़ाई लड़ी गई और काफी ना नुकर के बाद विश्वविद्यालय के समान पदनाम स्वीकृत किए गए। लेकिन महाविद्यालय शिक्षकों की पीडा इसके बाद भी ख़त्मनहीं हुई। प्रारम्भ में तो यह भी प्रावधान था कि असोसिएट प्रोफ़ेसर पद पर जितने लोग कार्यरत हैं उनके केवल दस प्रतिशत ही प्रोफ़ेसर पद पर पदोन्नत हो सकेंगे। यह प्रावधान अन्यायपूर्ण था, लेकिन लागू इतना भी नहीं हुआ। कागज़ों में तो स्वीकृति हो गई लेकिन प्रोफ़ेसर बनाया किसी को भी नहीं गया। इसके अनेक कारण रहे।

इस कारण हुआ यह कि मान लें एक ही तिथि को एक व्यक्ति ने विश्वविद्यालय में पदभार ठाहण किया और दूसरे ने महाविद्यालय में, तो कुछ बरस बाद विश्वविद्यालय वाला तो प्रोफ़ेसर बन गया, महाविद्यालय वाला लेक्चरर ही बना रहा। बहुत बार तो ऐसा भी हुआ कि महाविद्यालय में पूरी ज़िंदगी नौकरी कर चुकने के बाद भी व्यक्ति उसी पद से सेवा निवृत्त भी हो गया जिस पद से उसने नौकरी शुरू की थी। न सिर्फ इतना, पदनाम न बदलने या पदोन्नत न होने से अनेक अकादमिक उपलब्धियों से भी उसे वंचित रहना पड़ा। अगर आप इतने वर्ष तक प्रोफ़ेसर नहीं रहे तो आप कुलपति के पद के लिए पात्र नहीं होंगे से लगाकर पदनाम न होने से शोध निदेशक, बल्कि शोध परीक्षक तक न बन पाने तक की अनेक व्यथाएं महाविद्यालयों के शिक्षक झेलते रहे हैं। इस बीच राजस्थान में उच्च शिक्षा का खूब विस्तार हुआ। न केवल नए विश्वविद्यालय खुले, खूब सारे नए महाविद्यालय भी खोले गए। इसके बावज़ूदमहाविद्यालयों में असल पदोन्नति यही सम्भव है कि आप प्राचार्य बन जाएं। लेकिन प्राचार्य तो उतने ही बनेंगे जितने महाविद्यालय होंगे।

महाविद्यालयों में कार्य करने का एक बहुत बड़ा नुकसान यह तो शुरू से ही है कि अकादमिक दुनिया में विश्वविद्यालय में काम करने वाले को विद्वान और महाविद्यालय में काम करने वाले को एंवेई माना जाता रहा है। इस बात का ज़िक्र न ही किया जाना उपयुक्त होगा कि सामान्यत: विश्वविद्यालयों में कितना काम होता है और महाविद्यालयों में कितना होता है। नहीं नहीं करते भी महाविद्यालयों में कक्षाएं लगती हैं, पढ़ाई होती है, शिक्षक पढ़ाने के अलावा भी बहुत सारे काम करते हैं। इन सबके बावज़ूद रहते वे इस अकादमिक दुनिया के द्वितीय श्रेणी के नागरिक ही हैं। इस सबके ऊपर यह कि उनकी पदोन्नति के अवसर भी सीमित होते हैं। स्वाभाविक ही है कि विभिन्न शिक्षक संगठन इस दूरी व असमानता को पाटने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहे हैं और उन्हीं के प्रयत्नों से महाविद्यालय शिक्षकों को विश्वविद्यालय के समान पदनाम प्राप्त हुए। असमानता दूर करने की दिशा में उठा यह दूसरा कदम था। पहला कदम इससे पहले समान वेतनमान के रूप में उठाया जा चुका था। यहीं यह भी याद दिला देना अनुचित नहीं होगा कि लम्बे समय तक विश्वविद्यालय की तुलना में महाविद्यालय शिक्षकों का वेतन कम था और यह फासला साल दर साल बढ़ता जाता था। बात को स्पष्ट करने के लिए मैं अपना उदाहरण देता हूं। जिस समय मेरा वेतनमान 375 से प्रारम्भ होता था, उसी समय विश्वविद्यालय शिक्षक का 400 से प्रारम्भ होता था, और जैसे इतना ही पर्याप्त न हो, मुझे 25 प्रतिशत वार्षिक की वेतन वृद्धि मिलती थी, उन्हें 40 प्रतिशत वार्षिक की। इस तरह फासला साल दर साल बढ़ता जाता था। अगर वेतनमान न बदलते या पदोन्नित न होती तो दस साल की नौकरी के बाद विश्वविद्यालय में कार्यरत शिक्षक को 760 मूल वेतन मिलता, जबकि उसी के साथ काम शुरू करने वाला महाविद्यालय शिक्षक 600 तक ही पहुंच पाता। जो लोग मेरे साथ विश्वविद्यालय में गए वे कभी के प्रोफ़ेसर बन गए, जबकि मैं लेक्चरर ही रहा। अलबत्ता इसके साथ सीनियर और सेलेक्शन स्केल जैसे शब्द जुड़ते रहे। सेवा निवृत्त होते–होते प्राचार्य भी बन गया, लिखता पढ़ता भी रहा, अकादमिक दुनिया में पहचान भी बनी, स्नातकोत्तर अध्यापन भी किया, लेकिन प्रोफ़ेसर पद मेरी पहुंच से बाहर ही रहा। अब बहुत बरसों के संघर्ष के बाद मेरे सेवा संवर्ग के साथियों को व्यथित करने वाली यह विसंगति दूर हो सकी है। यह देर आयद दुरुस्त आयद वाली बात है।

> **बहरहाल, अभी तो नए बने प्रोफ़ेसरों को बधाई और उनसे यह निवेदन भी कि पूरा समाज उनकी तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहा है, अब यह उनका दायित्व है कि वे अपने चयन को सही साबित करें। शिक्षक से हमारा समाज कुछ ज़्यादा ही अपेक्षाएं रखता है।**

इस पूरी पृष्ठभूमि में देखने पर स्पष्ट हो जाएगा कि राजस्थान सरकार ने अपने उच्च शिक्षा विभाग में कार्यरत महाविद्यालय शिक्षकों में से 1309 को प्रोफ़ेसर पद पर पदोन्नत कर एक ऐतिहासिक महत्त्व का काम किया है। जो लोग इस पूरी प्रक्रिया से परिचित नहीं हैं उनकी जानकारी के लिए यह भी बता दूं कि ये लोग बहुत जटिल प्रक्रिया की कसौटियों पर खरे उतर कर प्रोफ़ेसर बने हैं। यह देखा–परखा गया है कि इन्होंने ख़ुद पी–एचडी की उपाधि हासिल की है या नहीं, इन्होंने कितने शोध पत्र प्रकाशित करवाए हैं, क्या इन्होंने शोध निर्देशन किया है, इनके निर्देशन में कितने विद्यार्थियों को शोध उपाधि प्रदान की गई है, क्या इनके पास कोई शोध परियोजनाएं भी थीं, क्या इन्होंने स्तरीय गोष्ठियों सेमिनार आदि में सहभागिता की है, वहां पत्र वाचन किया है, इनके प्रकाशन क्या और कितने हैं, क्या इन्होंने अध्यापन सामग्री के विकास और पाठ्यक्रम निर्माण में कोई योग दिया है, जिस संस्था में ये काम करते हैं वहां इनका क्या योगदान रहा है, इनका वार्षिक कार्य निष्पादन संतोषप्रद रहा है या नहीं – और ऐसे अनेक मानदण्डों पर इनको जांचा–परखा गया है, तब कहीं जाकर इनके नाम के आगे प्रोफ़ेसर जुड़ सका है। यह काम होने में विलंब तो हुआ ही है। इस सूची में 149 साथी ऐसे हैं जो सेवा निवृत्त हो चुके हैं। अगर उन्हें सेवा में रहते यह पद हासिल हुआ होता तो बात ही कुछ और होती। उम्मीद करें कि भविष्य में यह काम समयबद्ध रूप से होता रहेगा।

महाविद्यालय शिक्षकों को प्रोफ़ेसर पद पर पदोन्नत कर राज्य सरकार ने उनकी लम्बे समय से चली आ रही मांग को पूरा कर जो काम किया है उसकी जितनी तारीफ़ की जाए कम है। यह काम बहुत श्रमसाध्य था और इसके लिए शिक्षकों और कर्मचारियों की एक बड़ी टीम ने दिन–रात अनथक श्रम किया है। यह सब सम्भव इसलिए भी हुआ कि शिक्षकों की इस मांग को न केवल प्रशासन का, राजनेताओं का भी समर्थन मिल सका। यह बात कहने की ज़रूरत नहीं है कि हमारे यहां राजनेताओं और प्रशासन की इच्छा के बग़ैर पत्ता भी नहीं हिल सकता है। तंत्र के भीतर रहकर मैंने इस बात को बहुत अच्छी तरह जाना समझा है। और यही कारण है कि राज्य के उच्च शिक्षा विभाग में हुए इस ज़बर्दस्त काम के लिए मैं कॉलेज शिक्षा आयुक्तालय के उच्चाधिकारियों, शासन सचिवालय के संबद्ध अधिकारियों और राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री व मुख्य मंत्री की मुक्त कण्ठ से सराहना करना चाहता हूं। एक बार फिर कहूं कि जिन अधिकारियों और कर्मचारियों ने अभिलेखों की जांच परख कर इन प्रोफ़ेसरों की अर्हता सुनिश्चित की, उनका काम सर्वाधिक प्रशंसनीय रहा है। शिक्षक संगठनों ने अनवरत दबाव बनाए रखा, इस बात की भी तारीफ़ की जानी चाहिए।

मैंने प्रारम्भ में यह ज़िक्र किया कि कुछ लोग मेरे इस सोच से असहमत हो सकते हैं। मैं उनकी असहमति को उच्च गुणवत्ता के उनके आग्रह के रूप में देखता हूं। मुझे यह बात स्वीकार करने में भी संकोच नहीं है कि एक प्रोफ़ेसर के रूप में हम जिस बौद्धिक, गरिमापूर्ण और प्रखर व्यक्तित्व की कल्पना करते हैं, वह आज कल्पना ही है। लेकिन क्या ऐसा जीवन के सभी क्षेत्रों में भी नहीं हुआ है? हम किसी एक इकाई से ख़ास तरह की अपेक्षाएं रखें तो हमारा निराश होना स्वाभाविक ही है। लेकिन अगर हम इस बात को समझ लें कि पूरा समाज एक इकाई है और उसमें अगर एक जगह स्तर में गिरावट आती है तो दूसरी जगहें इस बात से अप्रभावित नहीं रह सकती हैं, तो शायद हमारा नज़रिया अलहदा होगा।

बहरहाल, अभी तो नए बने प्रोफ़ेसरों को बधाई और उनसे यह निवेदन भी कि पूरा समाज उनकी तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहा है, अब यह उनका दायित्व है कि वे अपने चयन को सही साबित करें। शिक्षक से हमारा समाज कुछ ज़्यादा ही अपेक्षाएं रखता है, उसको परखने के मानदण्ड कुछ ज़्यादा ही कठोर होते हैं लेकिन इस बात को शिक्षक के हमारे जीवन में स्थान के प्रतिफलन के रूप में देखा जाना और तदनुरूप बर्ताव किया जाना चाहिए।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

अक्षय तृतीया– शुभ संकल्प का खास दिन

आदित्य जैन

अक्षय तृतीया ऐसा ही शुभ दिन है, वैशाख शुक्ल तृतीया का यह दिन दान, जप, तीर्थ स्नान, हवन, किसी वस्तु की खरीद और यहां तक कि रिश्तों के गठजोड़ के लिए भी बहुत अहमियत रखता है। महानगरों से लेकर गांवों कस्बों तक शादी–ब्याह के लिए यह अबूझ मुहूर्त माना जाता है। मान्यता है कि यह दिन, हर शुभ और सार्थक कार्य के लिए मंगलमय और अनुकूल होता है। मंगल कार्य इस दिन आयोजित किए जाते भी हैं।

अक्षय तृतीया वैशाख शुक्ल तृतीया को कहा जाता है। वैदिक कलैण्डर के चार सर्वाधिक शुभ दिनों में से यह एक मानी गई है। अक्षय से तात्पर्य है जिसका कभी क्षय न हो अर्थात् जो कभी नष्ट नहीं होता। भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के वृन्दावन में ठाकुर जी के चरण दर्शन इसी दिन होते हैं। अक्षय तृतीया को सामान्यत: अखतीज या अक्खा तीज के नाम से भी पुकारा जाता है।

हिन्दू परंपरा : अक्षय तृतीया को भारत और नेपाल के कई क्षेत्रों में हिंदुओं और जैनियों द्वारा नए उद्यम, विवाह, सोने या अन्य संपत्ति जैसे महंगे निवेश और किसी भी नई शुरुआत के लिए शुभ माना जाता है। यह उन प्रियजनों को याद करने का भी दिन है, जिनकी मृत्यु हो गई है। यह दिन महिलाओं, विवाहित या अविवाहितों के लिए क्षेत्रीय रूप से महत्वपूर्ण है, जो अपने जीवन में पुरुषों की भलाई के लिए प्रार्थना करती हैं या जिससे वे भविष्य में सगाई कर सकती हैं। प्रार्थना के बाद, वे अंकुरित चने (अंकुरित), ताजे फल और भारतीय मिठाइयाँ वितरित करते हैं। यदि अक्षय तृतीया सोमवार (रोहिणी) को पड़ती है, तो त्योहार और भी शुभ माना जाता है। इस दिन उपवास, दान और दूसरों की मदद करना एक और उत्सव है। श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 के श्लोक 23–24 में गीता ज्ञान दाता ने निर्देश देते हुए स्पष्ट कहा है कि जो साधक शास्त्रों में वर्णित उपासना क्रियाओं के अतिरिक्त अन्य कोई साधना करते हैं, उन्हें न तो सुख की प्राप्ति होती है। न सिद्धि मिलती है, न मोक्ष की प्राप्ति होती है, अर्थात् यह व्यर्थ की पूजा है। साधक को उन सभी क्रियाओं का त्याग कर देना चाहिए जिनका उल्लेख गीता और वेद अर्थात् ईश्वर प्रदत्त शास्त्रों में नहीं है।

हिंदुओं द्वारा अक्षय तृतीया को भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम का जन्मदिन माना जाता है। वे वैष्णव मंदिरों में पूजनीय हैं जो लोग इसे परशुराम के सम्मान में मनाते हैं, वे कभी–कभी इस त्योहार को परशुराम जयंती भी कहते हैं। वैकल्पिक रूप से, कुछ लोग विष्णु के आठवें अवतार कृष्ण पर अपनी श्रद्धा केंद्रित करते हैं।

ओडिशा में, अक्षय तृतीया आगामी खरीफ मौसम के लिए चावल धान की बुवाई की शुरुआत के दौरान मनाया जाता है। दिन की शुरुआत किसानों द्वारा अच्छी फसल के आशीर्वाद के लिए धरती माता, बैलों, अन्य पारंपरिक कृषि उपकरणों और बीजों की पूजा के साथ होती है। खेतों की जुताई के बाद, किसान राज्य की सबसे महत्वपूर्ण खरीफ फसल के प्रतीकात्मक शुरुआत के रूप में धान के बीज बोते हैं। इस अनुष्ठान को अखि मुठी अनुकुला (अखि–अक्षय तृतीया; मुठी– मुट्ठी भर धान; अनुकुला– शुरुआत या उद्घाटन) कहा जाता है और पूरे राज्य में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। हाल के वर्षों में, इस आयोजन को समारोह के कारण बहुत प्रचार मिला है किसान संगठनों और राजनीतिक दलों द्वारा आयोजित अखि मुठी अनुकुला कार्यक्रम। जगन्नाथ मंदिर की रथ यात्रा उत्सव के लिए रथों का निर्माण भी इसी दिन पुरी में शुरू होता है।

तेलुगु भाषी राज्यों तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में, त्योहार समृद्धि से जुड़ा हुआ है, और महिलाएं सोना और आभूषण खरीदती हैं। सिंहाचलम मंदिर में इस दिन विशेष उत्सव मनाए जाते हैं। मंदिर के मुख्य देवता को शेष वर्ष के लिए चंदन के लेप में ढका जाता है, और केवल इस दिन अंतर्निहित मूर्ति को दिखाने के लिए हटाए गए देवता पर चंदन की परतें लगाई जाती हैं। वास्तविक रूप या निजा रूप दर्शनम का प्रदर्शन इस दिन होता है।

सोना–चांदी खरीदने वालों के लिए यह दिन बेहद शुभ है। चावल खरीदना, बैंक खाते में पैसा जमा करना, किसी भी तरह की नई चीजें या प्रसिद्ध मंदिरों में जाने के बर्तन खरीदना, भोजन दान करना या गरीब लोगों के लिए विशेष पेशकश करना, या शिक्षा शुल्क के लिए गरीब बच्चों की मदद करना, यह सब अक्षय तृतीया के लिए अच्छे संकेत हैं।

जैन परंपरा : जैन धर्म में , अक्षय तृतीया पहले तीर्थंकर , (ऋषभनाथ) को याद करती है, जिन्होंने अपने हाथों में गन्ने के रस का सेवन करके अपनी एक साल की तपस्या को समाप्त कर दिया। कुछ जैन त्योहार को वर्षी तप कहते हैं । उपवास और तपस्वी तपस्या जैनियों द्वारा चिह्नित की जाती है, विशेष रूप से पालिताना (गुजरात) जैसे तीर्थ स्थलों पर । इस दिन, जो लोग वर्ष भर के वैकल्पिक दिन उपवास का पालन करते हैं, जिसे वर्षी–तप के रूप में जाना जाता है, वे पराना (गन्ने का रस पीने) करके अपना तपस्या समाप्त करते हैं।

दिव्य अवतार तिथि : ग्रीष्म ऋतु का पदार्पण, हरियाली फ़सल को पका कर, लोगों में खुशी का संचार कर, विभिन्न व्रत, पर्वों के साथ होता है। भारत भूमि व्रत व पर्वों के मोहक हार से सजी हुई मानव मूल्यों व धर्म रक्षा की गौरव गाथा गाती है। धर्म व मानव मूल्यों की रक्षा हेतु श्रीहरि विष्णु देशकाल के अनुसार अनेक रूपों को धारण करते हैं, जिसमें भगवान परशुराम, नर नारायण के तीन पवित्र व शुभ अवतार अक्षय तृतीया को उदय हुए थे। मानव कल्याण की इच्छा से धर्म शास्त्रों में पुण्य शुभ पर्व की कथाओं की आवृत्ति हुई है, जिसमें अक्षय तृतीया का व्रत भी प्रमुख है, जो कि अपने आप में स्वयंसिद्ध है।

क्षमा–प्रार्थना का दिन : हिन्दू धर्म की मान्यताओं के अनुसार यह दिन सौभाग्य और सफलता का सूचक है। इस दिन को सर्वसिद्धि मुहूर्त दिन भी कहते है, क्योंकि इस दिन शुभ काम के लिये पंचांग देखने की ज़रूरत नहीं होती। ऐसा माना जाता है कि आज के दिन मनुष्य अपने या स्वजनों द्वारा किये गये जाने–अनजाने अपराधों की सच्चे मन से ईश्वर से क्षमा प्रार्थना करे तो भगवान उसके अपराधों को क्षमा कर देते हैं और उसे सदगुण प्रदान करते हैं, अत: आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में सदा के लिये अर्पित कर उनसे सदगुणों का वरदान मांगना चाहिए।

धार्मिक महत्त्व : पुराणों में उल्लेख मिलता है कि इसी दिन से त्रेता युग का आरंभ हुआ था। नर नारायण ने भी इसी दिन अवतार लिया था। भगवान परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि को हुआ। प्रसिद्ध तीर्थस्थल बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से ही पुन: खुलते हैं। वृन्दावन स्थित श्री बांके बिहारी जी के मन्दिर में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते हैं, अन्यथा वे पूरे वर्ष वस्त्रों से ढके रहते हैं। अक्षय तृतीया को व्रत रखने और अधिकाधिक दान देने का बड़ा ही महात्म्य है। अक्षय तृतीया में सतयुग, किंतु कल्पभेद से त्रेतायुग की शुरुआत होने से इसे युगादि तिथि भी कहा जाता है। वैशाख मास में भगवान भास्कर की तेज धूप तथा लहलहाती गर्मी से प्रत्येक जीवधारी क्षुधा पिपासा से व्याकुल हो उठता है। इसलिए इस तिथि में शीतल जल, कलश, चावल, चना, दूध, दही आदि खाद्य व पेय पदार्थों सहित वस्त्राभूषणों का दान अक्षय व अमिट पुण्यकारी माना गया है।

सुख व समृद्धि वर्धक : तृतीया तिथि माँ गौरी की तिथि है, जो बल–बुद्धि वर्धक मानी गई हैं। अत: सुखद गृहस्थ की कामना से जो भी विवाहित स्त्री–पुरुष इस दिन माँ गौरी व सम्पूर्ण शिव परिवार की पूजा करते हैं, उनके सौभाग्य में वृद्धि होती है। यदि अविवाहित स्त्री–पुरुष इस दिन श्रद्धा विश्वास से माँ गौरी सहित अनंत प्रभु शिव को परिवार सहित शास्त्रीय विधि से पूजते हैं तो उन्हें सफल व सुखद वैवाहिक सूत्र में अविलम्ब व निर्बाध रूप से जुड़ने का पवित्र अवसर अति शीघ्र मिलता है। वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया के दिन अक्षय तृतीया में पूजा, जप–तप, दान स्नानादि शुभ कार्यों का विशेष महत्व तथा फल रहता है।

व्रत पद्धति : इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठें। अपने नित्य कर्म व घर की साफ–सफ़ाई से निवृत होकर स्नान करें। वैसे इस दिन समुद्र, गंगा या यमुना में स्नान करना चाहिए। इस दिन उपवास रखें और घर में ही किसी पवित्र स्थान पर विष्णु भगवान की मूर्ति या चित्र स्थापित कर पूजन का संकल्प करें। संकल्प के बाद भगवान विष्णु को पंचामृत से स्नान कराएं, तत्पश्चात् उन्हें सुगंधित चंदन, पुष्पमाला अर्पण करें। नैवेद्य में जौ या जौ का सत्तू, ककडी और चना की दाल अर्पण करें। भगवान विष्णु को तुलसी अधिक प्रिय है, अत: नैवेद्य के साथ तुलसी अवश्य चढाएँ। जहाँ तक हो सके तो 'विष्णु सस्त्रनाम' का पाठ भी करें। अंत में भक्ति पूर्वक आरती करें। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य और चंद्रमा इस दिन उच्चस्थ स्थिति में होते हैं। इस दिन उपवास रखते हैं और जौ, सत्तू, अन्न तथा चावल से भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। इस दिन को नवन्न पर्व भी कहते हैं। इस दिन बरतन, पात्र, मिष्ठान, तरबूज़ा, ख़रबूज़ा, दूध, दही, चावल का दान देना चाहिए।

स्कंद पुराण और भविष्य पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में जन्म लिया। सौभाग्यवती स्त्रियाँ और क्वारी कन्याएँ इस दिन गौरी–पूजा करके मिठाई, फल और भीगे हुए चने बाँटती हैं, गौरी की पूजा करके धातु या मिट्टी के कलश में जल, फल, फूल, तिल, अन्न आदि लेकर दान करती हैं।

सौभाग्य का प्रतीक : अक्षय तृतीया के दिन ख़रीदे गये वेशक़ीमती आभूषण एवं सामान शाश्वत समृद्धि के प्रतीक हैं। इस दिन ख़रीदा व धारण किया गया सोना अखण्ड सौभाग्य का प्रतीक माना गया है। इस दिन शुरू किये गए किसी भी

नये काम या किसी भी काम में लगायी गई पूँजी में सदा सफलता मिलती है

और वह फलता–फूलता है। यह माना जाता है कि इस दिन ख़रीदा गया सोना

कभी समाप्त नहीं होता, क्योंकि भगवान विष्णु एवं माता लक्ष्मी स्वयं उसकी रक्षा करते हैं।

– आदित्य जैन

'देश के लोगों की जान–माल से खिलवाड़ कर रही ''ओला'' कैब कम्पनी'

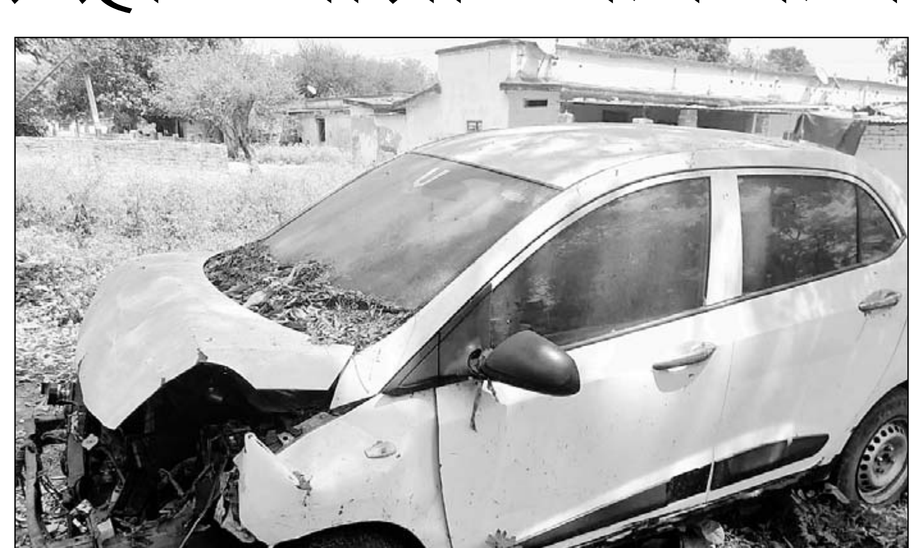

- **बिना बीमा, बिना फिटनेश, बिना टैक्स जमा किये गाड़ियों पर की जा रही बुकिंग**

कानपुर। कानपुर महानगर की बिगड़ी यातायात व्यवस्था की कमान जब से पुलिस उपायुक्त यातायात आई. पी. एस. रवीना त्यागी ने संभाली है, तब से शहर की सड़कों पर चलने वाले वाहन सवारों को पहले की अपेक्षा बहुत राहत मिली है किन्तु शहरवासियों की ही नहीं अपितु कानपुर महानगर में आने वाले सभी व्यक्तियों की सुरक्षित यात्रा और उनकी सुरक्षा को लेकर किये जा रहे प्रयासों को देश की एक कैब कम्पनी ओला (ओ. एल. ए.) कमीशन के लालच में जमकर पलीता लगा रही है। ऐसे नजारे सामने आ चुके हैं जिनसे स्पष्ट है कि कैब कम्पनी ओला के द्वारा बुकिंग कर यात्रा करना सुरक्षित कतई नहीं माना जा सकता है और अपने कमीशन के लालच में यह कम्पनी लोगों की जानमाल से खिलवाड़ कर रही है, इतना ही नहीं बल्कि देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिये एक बड़ा खतरा साबित हो सकती है!

स्थानीय निवासी श्याम सिंह पंवार ने बताया कि ओला कैब कम्पनी से हुण्डई कम्पनी की एक कार नम्बर यू.पी. 78 एफ. एन. 5980 सम्बद्ध है। कैब कम्पनी के अभिलेखों में इस गाड़ी को चलाने हेतु विजय कुमार नामक व्यक्ति अधिकृत है। दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद कई महीनों से यह कार, जी.–1 टी/17, अर्मापुर स्टेट कानपुर नगर के पते पर खड़ी है। इस गाड़ी का फिटनेश 16 जनवरी 2021 तक, टैक्स 31 दिसम्बर 2019 तक व इन्श्योरेन्स 15 जनवरी 2020 तक वैध है और उपरोक्त गाड़ी के नाम पर ओला कैब कम्पनी, लोगों को बुकिंग दे कर कमीशन के लालच में उनकी जानमाल की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ किया है। ऐसे में आशंका है कि ऐसा ही अनेक मामलों में और भी हो सकता है। ऐसे में सवाल उठता है कि देश की अन्य कैब कम्पनियों में भी क्या ऐसा नहीं हो रहा होगा और लोगों की जानमाल की सुरक्षा के साथ अन्य कम्पनियों द्वारा खिलवाड़ किया जा रहा होगा ?

श्याम सिंह पंवार ने बताया कि ओला कैब कम्पनी के रीजनल सेल्स मैनेजर उप्र अंकुर त्रिपाठी व विधिक सलाहकार एडवोकेट संजय जायसवाल की मौजूदगी में थाना गुजैनी परिसर में जब ओला कैब कम्पनी के द्वारा निर्धारित किये गये सुरक्षा मानकों जैसे–कम्पनी से सम्बद्ध होने वाली गाड़ी का मेकअप, गाड़ी में लिखा जाने वाला विवरण (मालिक का नाम, ड्राईवर का नाम, हेल्पलाइन नम्बर आदि) ड्राइवर की ड्रेस, गाड़ी में लगने वाला सुरक्षात्मक बटन, प्रथम दृष्टया चिकित्सकीय बॉक्स, आग लगने के दौरान बचाव हेतु रखा जाने वाला सिलेण्डर, उपभोक्ता द्वारा ओटीपी बताने के बाद वेरीफाई करने वाला ध्वनि सूचक यन्त्र, बुकिंग के अनुसार यात्रा का नियत किये गये मानचित्र पर ही यात्रा करवाना, गाड़ी की फिटनेश, टैक्स, इन्श्योरेन्स, चालक का चरित्र सत्यापन आदि जरूरी तथ्यों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई तो अंकुर त्रिपाठी ने बताया कि सुरक्षा की दृष्टिगत सभी जरूरी मानक होने ही चाहिये, इसके अलावा समय–समय पर उनका भौतिक परीक्षण/सत्यापन भी ओला कैब कम्पनी की टीम द्वारा होना चाहिये। तत्पश्चात ओला कैब एप के माध्यम से शुक्रवार को कई लोगों के मोबाइलों ओला एप के माध्यम से बुकिंग कर कई गाड़ियाँ, गुजैनी थाना के निकट कारगिल पेट्रोल पम्प की लोकेशन पर भौतिक परीक्षण/सत्यापन हेतु बुलवाईं और सैकड़ों लोगों की मौजूदगी में गाड़ियों का भौतिक परीक्षण/सत्यापन त्रिपाठी से करवाया तो पाया गया कि गाड़ियाँ सुरक्षा की दृष्टि के कतई फिट नहीं थीं, एक बुकिंग में जो चालक गाड़ी को लेकर आया था, वह अभिलेख पर दर्ज नहीं था, बल्कि उसके स्थान पर कोई अन्य व्यक्ति चालक बना था।

रीजनल सेल्स मैनेजर अंकुर त्रिपाठी की मानें तो ओला कैब कम्पनी देश के लोगों की सुरक्षा के साथ ही नहीं बल्कि देश की सुरक्षा व्यवस्था के साथ भारी खिलवाड़ कर रही है। उन्होंने स्वयं देखा कि कैब कम्पनी में अटैच अनेक गाड़ियां जो चलन में नहीं उनके एप दूसरी गाड़ियों में धड़ल्ले से प्रयोग किये जा रहे हैं और जो गाड़ियां चलने लायक ही नहीं हैं उनके द्वारा बुकिंग धड़ल्ले से की जा रही है।

ओला कम्पनी के रीजनल सेल्स मैनेजर अंकुर त्रिपाठी ने लिखित रूप में स्वीकार किया है कि ओला की गाड़ियों में यात्रा करना लोगों के लिये सुरक्षित नहीं है। उन्होंने यह तक लिख कर दिया है कि ओला कैब की गाड़ी से कोई भी अपराध हो सकता है, आतंकवादी हमला हो सकता है।

ऐसे में क्या कानपुर पुलिस कमिश्नरेट की पुलिस उपायुक्त यातायात रवीना त्यागी (आई. पी. एस.) व सभी राज्य सरकारों सहित भारत सरकार को इस बारे में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता नहीं है, क्यों यह सिर्फ कानपुर महानगर के लोगों की ही नहीं बल्कि देश के सभी लोगों की जानमाल की सुरक्षा से जुड़ा गम्भीर विषय है ? ऐसे में जिम्मेदारों को चाहिये कि सिर्फ ओला कैब कम्पनी ही नहीं बल्कि सभी कैब कम्पनियों की जाँच गहनता से करवायें जिससे कि देश के लोगों की जानमाल की सुरक्षा से खिलवाड़ करने वालों को सबक मिल सके।

राशिफल

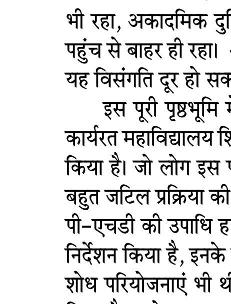

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 24 अप्रेल, 2023

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, मृगशिरा नक्षत्र रात्रि 2:07 तक, शोभन योग प्रात: 7:47 तक, विष्टि करण प्रात: 8:25 तक, चन्द्रमा दिन 1:12 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मेष, चन्द्रमा–वृष, मंगल–मिथुन, बुध–मेष, गुरू–मेष, शुक्र–वृष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:07 तक है। भद्रा प्रात: 8:25 पर समाप्त होगी। रवियोग रात्रि 2:07 से आरम्भ्ज्ञ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:36 तक, शुभ 9:13 से 10:50 तक, चर 2:03 से 3:40 तक, लाभ–अमृत 3:40 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:58, सूर्यास्त 6:52

मेष
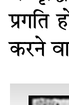
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
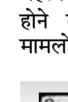
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
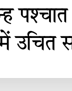
आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। दिन के मध्यान्ह पूर्व में पारिवारिक कारणों से अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यावसायिक आर्थिक मामलों में उचित सफलता मिलेगी।

कर्क
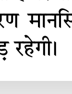
अपने आर्थिक मामलों से संबंधित कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मानसिक तनाव रहेगा और भागदौड़ रहेगी।

सिंह
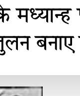
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कन्या
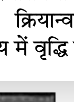
नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
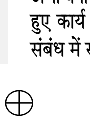
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक अड़चनें अभी बनी रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
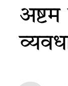
परिवार में आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

धनु
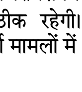
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार होगा। व्यावसायिक मामलों में महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

मकर
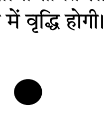
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में योजना बनेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी।

कुंभ
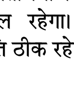
घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
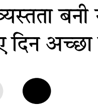
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।